विद्या ददाति विनयम्

संजीव®

सरसा पाठशाला

RPSC अजमेर द्वारा आयोजित स्कूल व्याख्याता भर्ती परीक्षा के लिए

मधुरिमा

गद्य-पद्य रचनाएँ

हिन्दी

नवीनतम सिलेबस
2024 पर आधारित
पूर्णतया संशोधित संस्करण

प्रथम श्रेणी

शिक्षक भर्ती परीक्षा हेतु

मुख्य आकर्षण

- सम्पूर्ण पाठ्य-सामग्री
- महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्न
- महत्त्वपूर्ण बिंदु एवं सारांश

कवि परिचय, मूल पाठ, सरल व्याख्या, महत्त्वपूर्ण बिंदु, वस्तुनिष्ठ स्तरीय प्रश्नों के साथ स्कूल-व्याख्याता हिंदी के लिए अनुपम कृति

लेखक

कैलाश नागौरी

(सरसा पाठशाला ऐप)

वॉट्सऐप- 9660669988

संपादक

डॉ. दीपेश कुमार सैनी

संजीव प्रकाशन, जयपुर

- **प्रकाशक :**
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
  जयपुर-03
  website : www.sanjivprakashan.com

- © **किरण** (सरसा पब्लिकेशन)

- **संस्करण- 2025** (चतुर्थ)
- **मूल्य :** 400.00
- **लेजर कम्पोजिंग :**
  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर
- **मुद्रक :** मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

- ❑ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं-
  Email : sanjeevcompetition@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग, संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- ❑ इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीक या तरीके-इलेक्ट्रोनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है।
- ❑ हमने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता या त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- ❑ सभी प्रकार के प्रतिवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.स.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	**कबीर ग्रंथावली** (संपादक-श्यामसुंदर दास) - साखी से गुरुदेव को अंग और प्रथम पाँच पद	5
2.	रामचरित मानस का **बालकांड** (तुलसीदास)	19
3.	**बिहारी रत्नाकर** (संपादक- जगन्नाथदास रत्नाकर) - प्रथम 25 दोहे	149
4.	**साकेत** काव्य (मैथिलीशरण गुप्त) का नौवाँ सर्ग	158
5.	**चिंतामणि भाग-1** (आ. रामचंद्र शुक्ल) का निबंध- कविता क्या है	214
6.	**कल्पलता** (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी) का निबंध- शिरीष के फूल	234
7.	**कफन** (कहानी, प्रेमचंद)	239
8.	**पुरस्कार** (कहानी, जयशंकर प्रसाद)	249
9.	**यही सच है** (कहानी, मन्नू भंडारी)	259

स्कूल व्याख्याता हिंदी के लिए संजीव व सरसा पाठशाला की अति महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

- ☞ **सरसा काव्यशास्त्र**
- ☞ **हिंदी साहित्य का सरल एवं सुबोध इतिहास**
- ☞ **साहित्य मंजरी- हिंदी साहित्य एक्जाम रिव्यू**
- ☞ **आरपीएससी हिंदी सॉल्वड पेपर्स 2010 से 2024**
- ☞ **सामान्य हिंदी व्याकरण**

प्राक्कथन

प्रिय विद्यार्थियों, 'मधुरिमा' पुस्तक की पूर्व भर्ती में शानदार सफलता के बाद इसका पूर्णतया संवर्द्धित एवं संशोधित संस्करण आपके हाथ में है। यह इसका चतुर्थ संस्करण है। इस बात से ही इस पुस्तक की सफलता का अंदाज लगाया जा सकता है। आपके सही मूल्यांकन से ही यह पुस्तक इतनी लोकप्रिय हुई है। इसके लिए हम आपके उज्ज्वल भविष्य के लिए ईश्वर से हार्दिक कामना करते हैं कि आप उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते रहे और नई नई ऊँचाइयों को छूते रहे।

इस मधुरिमा पुस्तक में स्कूल व्याख्याता माध्यमिक शिक्षा हिंदी परीक्षा के लिए स्नातकोत्तर स्तर सिलेबस में शामिल गद्य-पद्य रचनाओं को शामिल किया है। इसमें मूल रचनाओं की सरल व्याख्या दी गई है। इस पुस्तक में प्रतियोगी परीक्षा के लिए उपयोगी **लेखक परिचय, पाठ परिचय, मूल पाठ, महत्त्वपूर्ण बिंदु** और **महत्त्वपूर्ण वस्तुनिष्ठ प्रश्नों** को शामिल किया गया है। सभी प्रकार की पाठ्य-सामग्री अत्यंत उपयोगी है। इन रचनाओं में बालकांड एवं साकेत का नौवाँ सर्ग बड़ी रचनाएँ हैं। हमने इन दोनों रचनाओं को संपूर्ण रूप से शामिल किया है, ताकि विद्यार्थियों की दृष्टि में कोई पाठ्य-सामग्री अनदेखी न रह जाए। इसी तरह अन्य रचनाओं को भी पूर्ण रूप से शामिल किया गया है और स्तरीय प्रश्नों का निर्माण किया है। हमने प्रश्न बनाने के लिए पूर्णतया सावधानी बरती है। फिर भी कहीं त्रुटि मानवीय स्वभाववश हो सकती है। इसलिए हम आपसे निवेदन करते हैं कि यदि आपको इस पुस्तक में कहीं त्रुटि मिले तो इसे नजरअंदाज न करें बल्कि हमें वाट्सऐप पर अवश्य बताएँ। हम आपके आभारी रहेंगे। मुझे विश्वास है कि मैं आपके सुझावों से वंचित नहीं रहूँगा।

मैं हिंदी के विद्वानों एवं कवियों के प्रति सादर वंदन करता हूँ कि उनके कृतित्व से मुझे यह पुस्तक लिखने का अवसर मिला।

इस मधुरिमा पुस्तक के संपादन में **डॉ. दीपेश कुमार सैनी** ने महती भूमिका निभाई है और पाठ्य-सामग्री का अध्ययन कर उसकी सरलता एवं संक्षिप्तता को परखा है। संपूर्ण पाठ्य-सामग्री का प्रकाशन से पूर्व सरसा पाठशाला में शिक्षिका **अल्का मल्होत्रा** ने इस पुस्तक का अध्ययन कर इसे त्रुटिरहित बनाने में सहयोग किया है और **रामसिंह मेघवाल** की इस पुस्तक के लिए टाईपिंग एवं डिजाईनिंग प्रशंसनीय है। अंत में, मैं सभी पाठकों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उनको धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कैलाश नागौरी
सरसा पाठशाला ऐप

1. कबीर ग्रंथावली (गुरुदेव को अंग और प्रथम पाँच पद)

- कबीर का जन्म **काशी** (वर्तमान नाम-वाराणसी) में सन् 1398 में हुआ था तथा मृत्यु **मगहर** में सन् 1518 में हुई।
- कबीर के जीवन के बारे में अनेक किंवदंतियाँ हैं। उनके माता-पिता व जाति को लेकर अनेक किंवदंतियाँ है, लेकिन यह तय है कि कबीर जुलाहा थे। क्योंकि उन्होंने अपनी विभिन्न कविताओं में स्वयं को **काशी का जुलाहा** कहा है।
- कबीर के विधिवत् साक्षर होने का कोई प्रमाण नहीं मिलता है। **मसि कागद छुयो नहिं, कलम गहि नहिं हाथ** जैसी कबीर की पंक्तियाँ भी इसका प्रमाण देती हैं। उन्होंने देशाटन और सत्संग से ज्ञान प्राप्त किया था। किताबी ज्ञान के स्थान पर आँखों देखे सत्य और अनुभव को प्रमुखता दी है।
- कहा जाता है कि कबीर का जन्म किसी विधवा ब्राह्मण कन्या से हुआ, लोकोपवाद के भय से ब्राह्मणी ने उनको **लहरतारा ताल** में फेंक दिया था। यह बालक **नीरु** और **नीमा** नामक जुलाहे दम्पति को मिला। इसी जुलाहे दम्पति ने इस बालक का लालन-पालन किया। आगे चलकर यही बालक कबीर के रूप में प्रसिद्ध हुआ।
- कबीर की जाति के संबंध में हजारीप्रसाद द्विवेदी अपनी पुस्तक "**कबीर**" में प्राचीन उल्लेखों, कबीर की रचनाओं, प्रथाओं, वयनजीवी (बुनकर) जातियों की रीति-रिवाजों का विवेचन-विश्लेषण करके दिखाया है कि आज की वयनजीवी जातियों में से अधिकांश किसी समय ब्राह्मण श्रेष्ठता को स्वीकार नहीं करती थीं। जोगी नामक आश्रम-भ्रष्ट, घर-बारियों की एक जाति सारे उत्तर और पूर्व भारत में फैली थी। ये नाथपंथी थे, कपड़ा बुनकर और सूत कातकर या गोरखनाथ और भरथरी के नाम पर भीख माँगकर जीविका चलाया करते थे। मुसलमानों के आने के बाद ये लोग धीरे-धीरे मुसलमान होते रहे। कबीरदास जी इन्हीं नवधर्मांरित जातियों में पालित हुए थे।
- कबीर की पत्नी का नाम **लोई** व पुत्र का नाम **कमाल** व पुत्री का नाम **कमाली** था।
- एक बार कबीरदास जी **पंचगंगा घाट** पर थे, वहाँ पर स्वामी रामानन्द जी स्नान के लिए आए, तब रामानन्द जी का पैर कबीरदास जी पर पड़ गया। रामानन्द जी ने कहा- **राम राम कह।** कबीरदास जी इन शब्दों को गुरु मंत्र मानकर राम की उपासना करने लगे और रामानन्द को अपना गुरु मान लिया।
- कबीर भक्तिकाल की **ज्ञानाश्रयी काव्यधारा** (निर्गुण काव्यधारा) के प्रतिनिधि कवि हैं। कबीर रामानंद के शिष्य थे, किंतु कबीर के राम, रामानंद के राम से भिन्न है। इसलिए ही कबीर के संप्रदाय का स्पष्ट पता नहीं चलता।
- कबीर की रचनाओं में नाथों, सिद्धों और सूफ़ी संतों की बातों का प्रभाव मिलता है। वे कर्मकांड और वेद-विचार के विरोधी थे तथा जाति-भेद, वर्ण-भेद और संप्रदाय-भेद के स्थान पर प्रेम, सद्भाव और समानता का समर्थन करते थे।
- कबीर तथा अन्य निर्गुण संतों की उलटबाँसियाँ प्रसिद्ध है। उलटबाँसियाँ का पूर्व रूप हमें सिद्धों की "**संधा भाषा**" में मिलता है। उलटबाँसियाँ साधनात्मक अनुभूतियों को असामान्य प्रतीकों में प्रकट करती है। वे वर्णाश्रम व्यवस्था को माननेवाले संस्कारों को धक्का देती है। इन प्रतीकों का अर्थ खुलने पर ही उलटबाँसियाँ समझ आती है।
- कबीर अपनी बात को साफ़ और दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे- बने पड़े तो सीधे-सीधे नहीं तो दरेरा देकर। आ. रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार कबीर की भाषा **सधुकड़ी** अर्थात् राजस्थानी व पंजाबी मिली हुई **खड़ी बोली** है। कबीर के शब्द चयन व उनके सुष्ठु प्रयोग के कारण हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को "**वाणी का डिटेक्टर (तानाशाह)** कहा है।
- कबीर के राम निराकार हैं, फिर भी कबीर ने राम को मानवीय संबंधों में याद किया है।
- कबीर की भाषा के संबंध में विभिन्न मत-

सधुक्कड़ी भाषा	-	आ. रामचन्द्र शुक्ल व गोविन्द त्रिगुणायत
पंचमेल खिचड़ी	-	श्यामसुन्दर दास
वाणी का डिटेक्टर	-	हजारीप्रसाद द्विवेदी
संत भाषा	-	डॉ. बच्चनसिंह
ब्रजभाषा	-	सुनिति कुमार
अवधि भाषा	-	बाबू राम सक्सेना
बनारस की भाषा	-	उदय नारायण तिवारी

- कहते हैं कि सिकन्दर लोदी ने कबीर पर अत्याचार किया था।
- कबीर के साहित्य को प्रकाश में लाने का श्रेय **एच. एच. विल्सन** को है। **सन् 1903** में एच. एच. विल्सन ने कबीर के ग्रंथों की खोजकर उनकी संख्या **आठ** बताई।
- **हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने कबीर को भगवान विष्णु के **नृसिंहावतार की प्रतिमूर्ति** माना है।
- **डॉ. नगेन्द्र** के अनुसार कबीर की रचनाएँ-

1. अगाध मंगल	2. अनुराग सार
3. बानी	4. साखी
5. रेख्ता	6. मुहम्मदबोध
7. विवेक सागर	8. ज्ञान सागर

- कबीर के शिष्य धर्मदास ने कबीर की रचनाओं का संकलन '**बिजक**' नाम से किया। बिजक के **तीन भाग** है- 1. रमैनी 2. सबद 3. साखी
- साखी भाग में दोहों का संकलन किया है। इसमें **59** अंग है। प्रथम अंग '**गुरुदेव को अंग**' है और अंतिम अंग '**अबिहड़ को अंग**' है। साखी शब्द साक्षी का तद्भव रूप है। साक्षी का अर्थ होता है-गवाह। संत कबीर ने अपने आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर बताई गई ज्ञान की बात को स्वयं को साक्षी माना है। इसलिए इस संकलन में संकलित दोहों को साखी कहा गया है। साखी का दूसरा अर्थ सीख भी लिया जाता है।
- **सबद भाग** में कबीर के पदों का संकलन है। **रैमेनी भाग** में कबीर के पदों व चौपाइयों का संकलन है। इसी प्रकार साखी दोहों में हैं। रमैनी और सबद ब्रजभाषा में है जो उस समय मध्यदेश की काव्य-भाषा थी।
- कबीर के काव्य का संकलन श्यामसुन्दरदास ने '**कबीर ग्रंथावली**' नाम से और अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ने '**कबीर वचनावली**' नाम से किया।
- कबीर की मृत्यु 1518 ई. में मगहर (जिला-बस्ती) में हुई थी। जब कबीर की मृत्यु हुई थी तो हिंदू और मुसलमानों में विवाद हो गया।

हिंदू शव को जलाना चाहते थे और मुसलमान दफनाना चाहते थे। लेकिन बाद में पाया गया कि कबीर का शव अंतर्धान हो गया और शव की जगह फूल आ गए हैं। उन फूलों में से कुछ फूलों को मुसलमानों ने दफना दिया और कुछ फूलों को हिंदुओं ने जला दिया।

✍ **प्रसिद्ध पंक्तियाँ-**

- ''भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाए रामानन्द।
  परकट किया कबीर ने, सात दीप नौ खंड।।''
- ''काहै री नलिनी तू कुम्हलानी।''
- ''ढ़ाई आखर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय।''
- ''नैया बिच नदिया डूबती जाय।''
- ''माया महाठगिनी हम जानि।''
- ''चलती चाकी देखकर दिया कबीरा रोय।
  दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय।।''
- ''निरगुण राम निरगुण राम जपो रे भाई,
  अविगत की गति लखि न जाई।''

✍ **प्रसिद्ध कथन-**

- ''इसमें कोई सन्देह नहीं है कि ठीक मौके पर जनता के उस बड़े भाग को संभाला, जो नाथ-पंथियों के प्रभाव और भक्ति रस से शून्य पड़ता जा रहा था।'' - (आ.शुक्ल)
- ''संत कवियों में कबीर के बाद के कवि वैसे ही दिखाई पड़ते हैं जैसे चन्द्रोदय के बाद नक्षत्रमालाएँ।'' - (डॉ. बच्चनसिंह)
- ''साहित्य जगत में कबीर जैसा अक्खड़ और निराला जैसा धाखड़ कोई और कवि नहीं हुआ।'' -(हजारीप्रसाद द्विवेदी)
- ''भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था, भाषा उनके सामने नृत्य करती थी, थिरकती थी, वे तो वाणी के डिक्टेटर थे। '' -(हजारीप्रसाद द्विवेदी)
- ''कबीर तो उजाड़ का फूल है जो किसी माली की देखरेख में विकसित नहीं हुआ, लू व बारिश के थपेड़े उसके साथ संघात करते रहे पर उसकी गंध कभी मंद नहीं पड़ी।''- (हजारीप्रसाद द्विवेदी)

कबीर ग्रंथावली

संपादक- श्याम सुंदर दास

कबीर ग्रंथावली में महाकवि संत कबीरदास जी काव्य सर्जना का समेकित प्रकाशन है। संत कबीरदास जी ने अनेक दोहों व पदों की रचना की है। कबीर की समस्त रचना का यह संग्रह श्यामसुंदर दास ने तैयार किया है। इस ग्रंथ को तीन भागों में बांटा गया है- **साखी, पद व रमैनी।** साखी को **59 अंगों** में विभक्त किया गया है। साखी का प्रथम अंग **गुरुदेव को अंग** है और अंतिम अंग **अबिहड़ को अंग** है। इस प्रकार इस ग्रंथ में कुल **16 पद** है। प्रथम पद राग गौड़ी में है और अंतिम पद राग धनाश्री में है। **फर्स्ट ग्रेड हिंदी के नवीनतम सिलेबस में गुरुदेव को अंग और प्रथम पाँच पद लिए गए हैं।**

काशी नागरीप्रचारिणी सभा में रक्षित हस्तलिखित पुस्तकों की जब जाँच की गई तो कबीरदास जी के बारे में दो पुस्तकें ऐसी मिली जिसके बारे में किसी को जानकारी नहीं थी। एक पुस्तक सन् 1504 में लिखी गई थी और दूसरी 1824 ई. में लिखी गई थी। दोनों प्रतियों में पाठ-भेद बहुत ही कम था। बाद में लिखी गई पुस्तक में पहले लिखी गई पुस्तक से 131 दोहे और 5 पद अधिक थे। काशी नागरीप्रचारिणी सभा में योजना बनी थी कि इन पुस्तकों के आधार पर कबीरदास जी का एक ग्रंथ प्रकाशित किया जाए। सबसे पहले यह काम अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध को सौंपा गया, पर वे समयाभाव के कारण इस काम पूरा नहीं कर सके। फिर यह काम श्यामसुंदर दास को सौंपा गया। जिन्होंने दो वर्ष के समय में इस पुस्तक का काम पूरा किया। आज यह पुस्तक कबीर की रचनाओं के लिए प्रमाणिक पुस्तक है।

कबीर ग्रंथावली-

(1) साखी- (1) गुरुदेव को अंग (2) सुमिरण को अंग (3) विरहै को अंग (4) ग्यान विरहै को अंग (5) परचा की अंग (6) रस को अंग (7) लांब को अंग (8) जर्णा की अंग (9) हैरान की अंग (10) लै को अंग (11) निहकर्मी पतिव्रता को अंग (12) चितावणी की अंग (13) मन को अंग (14) सूषिम मारग को अंग (15) सूषिम जनम को अंग (16) माया को अंग (17) चाँणक को अंग (18) करणी बिना कथणी को अंग (19) कथणी बिना करणी को अंग (20) कामी नर को अंग (21) सहज को अंग (22) साँच को अंग (23) भ्रम विधौंसण को अंग (24) भेष को अंग (25) कुसंगति की अंग (26) संगति को अंग (27) असाध को अंग (28) साध को अंग (29) साध साषीभूत को अंग (30) साथ महिमाँ को अंग (31) मधि को अंग (32) सारग्राही को अंग (33) विचार को अंग (34) उपदेश को अंग (35) बेसास को अंग (36) पीव पिछाँणन को अन (37) बिर्कलाई की अंग (38) समथाई को अंग (39) कुसबद को अंग (40) सबद को अंग (41) जीवन मृतक को अंग (42) चित कपटी को अंग (43) गुरुसिष हेरा को अंग (44) हेत प्रीति सनेह को अंग (45) सूरा तन को अंग (46) काल को अंग (47) सजीवनी को अंग (48) अपारिष को अंग (49) पारिष को अंग (50) उपजणि की अंग (51) दया निरबैरता को अंग (52) सुंदरि को अंग (53) कस्तूरियाँ मृग को अंग (54) निंद्या को अंग (55) निगुणँ को अंग (56) बीनती कौ अंग (57) साषीभूत को अंग (58) बेलि को अंग (59) अबिहड़ को अंग

(2) पद- 1. (राग गौड़ी) 2. (राग रामकली) 3. (राग आसावरी) 4. (राग सोरठि) 5. (राग केदारौ) 6. (राग मारू) 7. (राग टोड़ी) 8. (राग भैरु) 9. (राग बिलावल) 10. (राग ललित) 11. (राग बसंत) 12. (राग माली गौडी) 13. (राग कल्याण) 14. (राग सारंग) 15. (राग मलार) 16. (राग धनाश्री)

(3) रमैनी - 1. (राग सूहौ) 2. (राग सतपदी) 3. (बड़ी अष्टपदी रमैणी) 4. (दुपदी रमैणी) 5. (अष्टपदी रमैणी) 6. (बारहपदी रमैणी) 7. (चौपदी रमैणी)

पंडित श्यामसुंदर दास का परिचय

- पंडित श्यामसुंदर दास का जन्म 1875 ई. को **काशी** में हुआ। पंडित श्यामसुंदर दास ने 1897 ई. में बी.ए. करके काशी के हिंदू स्कूल में अध्यापन का काम करने लगे। बाद में लखनऊ के कालीचरण स्कूल में प्रधानाध्यापक के पद पर रहे। बाद 1921 ई. में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए।

- पंडित श्यामसुंदर दास ने अपने साथियों के साथ मिलकर 1893 ई. में काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की थी। हिंदी शब्द सागर का संपादन, सरस्वती पत्रिका, आर्य भाषा पुस्तकालय की स्थापना, प्राचीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का संपादन, सभा-भवन का निर्माण, उच्च स्तरीय पुस्तकों का लेखन आदि उनके महत्त्वपूर्ण कार्य हैं जो हिंदी भाषा के उन्नयन व विकास में अभूतपूर्व योगदान देने वाले साबित हुए। वे जीवनभर हिंदी की सेवा करते रहे। हिंदी भाषा के विकास व उन्नयन के लिए उन्होंने पूर्ण मनोयोग से काम किया।

✍ **पं. श्यामसुंदर दास की मौलिक रचनाएँ-**

(1) नागरी वर्णमाला (2) साहित्यालोचन
(3) भाषाविज्ञान (4) हिंदी भाषा का विकास
(5) हिंदी कोविद ग्रंथमाला (6) गद्यकुसुमावली
(7) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (8) हिंदी भाषा और साहित्य
(9) गोस्वामी तुलसीदास (10) भाषा रहस्य
(11) मेरी आत्मकहानी

✍ **पं. श्यामसुंदर दास की संपादित रचनाएँ-**

(1) चंद्रावली (2) छत्र प्रकाश
(3) रामचरितमानस (4) पृथ्वीराज रासो
(5) हिंदी वैज्ञानिक कोश (6) हम्मीर रासो
(7) शकुंतला नाटक (8) रत्नाकर

कबीर की काव्यगत विशेषताएँ

- कबीरदास जी ने विधिवत् शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। उन्होंने भाव-विभोर होकर जो भी कहा था, वह काव्य बन गया था। उनके काव्य में काव्यगत् विशेषताएँ स्वत: आई है। काव्य की मधुरता ने काव्यांगों का स्वत: प्रतिपालन हुआ है। यहाँ हम कबीरदास जी की काव्य विशेषताओं का संक्षेप में अध्ययन करेंगे-

(1) वर्ण्य विषय-

कबीर भ्रमणशील थे और अपने अनुभव से जो भी ज्ञान प्राप्त किया था, उसी सत्यता को काव्य में प्रकट किया है। कबीर ने जीवन के हर एक पहलू को निकटता से देखा था। उन्होंने कागज लिखी बातें नहीं कही है, जो भी बातें कही है, आँखों देखी कही है। यही वजह है कि उनके दोहों का साखी कहा जाता है। अपनी बातों के साक्षी कबीर स्वयं हैं। कबीर ने सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक आदि के विविध पक्षों का चित्रण किया है। अपने काव्य में ब्रह्म, ज्ञान, भक्ति, दर्शन, गुरु-महिमा, जीव, माया, उपदेश, आचरण, मोह आदि का चित्रण किया है। डॉ. सतनामसिंह शर्मा ने **कबीर एक विवेचन** में लिखा है कि ''गहन सत्यों को, जिस रूप में भी संभव हुआ, उन्होंने प्रकट कर दिया। अभिव्यक्ति के लिए न तो उन्हें काव्यशास्त्र की आवश्यकता हुई और न ही काव्य-रीति के पालन की। जो सहज में बन सका, उन्हीं को उन्होंने अपनाया है।'' इस प्रकार कबीर का काव्य सहज अभिव्यक्ति है। **परशुराम चतुर्वेदी** ने लिखा है कि ''कबीर-साहित्य उन रंग-बिरंगे फूलों में नहीं है जो सजे-सजाये उद्यानों की क्यारियों में किसी क्रमविशेष के अनुसार उगाए जाते हैं और जिनकी छटा और सौंदर्य का अधिकांश मालियों के कला-नैपुण्य पर आश्रित रहा करता है। यह तो एक वन्य कुसुम है जो अपने स्थल पर अपने आप उगा है और जिसका विकास केवल प्राकृतिक नियमों पर ही निर्भर करता है।

(2) रस योजना-

कबीरदास जी एक संत महात्मा थे। उनके काव्य में अधिकतर शांत रस का ही निरूपण हुआ है। उनकी भक्तिपरक सभी साखियाँ और रमैनी में शांत रस ही प्रमुख रूप से है। शांत रस के अलावा अन्य रसों में कबीर का प्रिय रस श्रृंगार रस और अद्‌भुत रस है। दांपत्यमूलक उक्तियों में कबीर ने श्रृंगार रस में आत्मा-परमात्मा का चित्रण किया है। कबीर ने स्वयं को पत्नी और परमात्मा को पति रूप में मानकर श्रृंगार रस की रसमयी धारा बहाई है। '**दुलहिनी गावौ मंगलाचार, हम घरि आयो हो राजा राम भरतार**' कहकर कबीर ने श्रृंगार रस का सुंदर चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त अद्‌भुत रस का चित्रण उलटबासियों में हुआ है। इसके साथ ही हास्य रस का भी सुंदर चित्रण मिल जाता है।

कहीं-कहीं उपदेशात्मक पदों में काव्य नीरस भी हो गया है। **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने **कबीर ग्रंथ** में लिखा है कि ''कबीर ने काव्य लिखने की कहीं प्रतिज्ञा नहीं की, तथापि उनकी आध्यात्मिक गगरी से छलकते हुए रस से काव्य की कटोरी में भी कम रस इकट्ठा नहीं हुआ है। फलत: काव्यत्व रसत्व उनके पदों में फोकट का माल है, बाई प्रोडक्ट है। वह कोलतार और सीरे की भाँति और चीजों को बनाते बनाते अपने आप बन गया है।''

(3) व्यंग्य-शैली-

कबीर ने अपनी व्यंग्य-शैली से जाति-पाँति, पूजा-पाठ, जप-तप, तीर्थाटन, मंदिर-मस्जिद, पंडित-शेख, मुल्ला-शाक्त आदि विभिन्न विषयों पर करारा व्यंग्य किया है। उनके वैयक्तितक जीवन के अनुभवों, फक्कड़-जीवन, धार्मिक व सामाजिक परिस्थितियों ने कबीर को कटु व्यंग्यकार बना दिया है। **हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने लिखा है कि ''सच्च पूछा जाए तो हिंदी में आज तक ऐसा जबरदस्त व्यंग्य लेखक पैदा ही नहीं हुआ। उनकी साफ चोट करने वाली भाषा, बिना कहे भी सब कुछ कह देने वाली शैली और अत्यंत सादी किंतु अत्यंत तेज प्रकाशन-भंगी अनन्य साधारण है। पढ़ने से ही साफ मालूम होता है कि कहने वाला अपनी तरफ से एकदम निश्चिंत हैं। यदि वे अपनी ओर से निश्चिंत नहीं होता तो ऐसा करारा व्यंग्य नहीं करता।''

(4) भाषा

कबीर की भाषा के संबंध में विद्वानों में मतभेद हैं, लेकिन कबीर की रचना को पढ़ने से यह स्पष्ट है कि कबीर ने लोकभाषा का प्रयोग किया है। स्वयं कबीर ने अपनी भाषा को पूरबी कहा है, जिसमें बनारस, मिर्जापुर, गोरखपुर आदि क्षेत्रों में प्रचलित शब्दावली का प्रधान रूप से प्रयोग हुआ है। कबीर के तीर्थाटन, विविध भाषी शिष्यों एवं विस्तृत दृष्टिकोण के कारण कबीर की भाषा में अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं। इस प्रकार कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है जिसमें खड़ी बोली, राजस्थानी, अरबी, फारसी आदि भाषाओं के शब्द स्वत: आ गए हैं। पारसनाथ तिवारी ने **कबीरवाणी** में लिखा है कि ''कबीर की भाषा को देखकर उस ग्रामीण नायिका का स्मरण हो जाता है जो निहायत ही सादगी और आत्मविश्वासके साथ कहती है- गाँव में पैदा हुई, गाँव में ही रहती हूँ। जानती भी नहीं कि नगर कहाँ होता है। इतना अवश्य है कि नागरिकाओं के पति आकर यहाँ की खाक छान जाया करते हैं। वैसे कहने को जो भी हूँ, सो हूँ।''

हजारीप्रसाद द्विवेदी ने **कबीर ग्रंथ** में लिखा है कि भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा, उसे उसी रूप में भाषा कहलवा दिया- बन गया तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर। भाषा कबीर के सामने कुछ लाचार-सी नजर आती है। उसमें मानो हिम्मत ही नहीं है कि इस लापरवाह फक्कड़ की किसी फरमाइश को ना कर सके और अकथनीय कहानी का रूप देकर मनोग्राही बना देने की जैसी ताकत कबीर की भाषा में है, वैसी बहुत कम लेखकों में पायी जाती है।''

(5) छंद-अलंकार

कबीर ने सधुक्कड़ी छंदों का ही प्रयोग किया है, जिसमें साखी, सबद और रमैनी प्रमुख हैं। कबीर ने पदों में बसंत, बेलि, चाँचर,कहरवा, चौंतीसी, हिंडोला आदि छंदों का प्रयोग किया है। कबीर ने छंदों की काव्यशास्त्रीय नियमावली का ध्यान नहीं रखा है, पर गायन शैली का अवश्य ही ध्यान रखा है। कबीर ने काव्य में अधिकतर रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति, दृष्टांत आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।

(6) काव्य-रूप

कबीर के काव्य के तीन रूप है- साखी, सबद और रमैनी। साखी में दोहों का संकलन हैं, सबद में गेय-पदों का संकलन हैं और रमैनी में चौपाइयों का संकलन हैं। रमैनी में अनेक प्रकार की शैलियाँ संकलित हैं, जैसे- सतपदी, अष्टपदी, उलटबाँसियाँ, प्रतीक, अन्योक्ति आदि।

गुरुदेव कौ अंग

सतगुरु सवाँन को सगा, सोधी सईं न दाति।
हरिजी सवाँन को हितू, हरिजन सईं न जाति॥ 1॥

शब्दार्थ- **सवाँन**=समान। **सगा**=अपना। **सोधी**=साधु। **दाति**=दाता। **हरिजी**=भगवान। **सईं**=समान। **हरिजन**=भगवान का भक्त।

भावार्थ- कबीरदास जी ने गुरुदेव कौ अंग के सभी दोहों में गुरु की महिमा का वर्णन किया है। कबीरदास जी कहते हैं कि इस संसार में सद्गुरु के समान कोई सगा नहीं है अर्थात् कोई अपना नहीं है। इसी प्रकार प्रभु की भक्ति में रत साधु के सामान कोई दाता नहीं है, क्योंकि साधु अपने शिष्य को ज्ञान देते हैं। इसी प्रकार हरिजी अर्थात् भगवान के समान कोई हितैषी नहीं है और भगवान के भक्तों के समान कोई जाति नहीं है। कबीरदास जी ने यहाँ सद्गुरु, प्रभु भक्ति और भक्तों की महिमा का वर्णन किया है।

बलिहारी गुरु आपणैं द्यौं हाँडी कै बार।
जिनि मानिष तैं देवता, करत न लागी बार॥ 2॥

शब्दार्थ- **बलिहारी**=न्योछावर। **आपणैं**=अपने। **हाड़ी**=शरीर। **द्यौं**=आग। **जिनि**=जिन्होंने। **मानिष**=मनुष्य।

भावार्थ- कबीरदास जी कहते हैं कि मैं अपने गुरु को बार-बार बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने ने अपने ज्ञान रूपी आग में तपाकर मेरे मनुष्य शरीर को देवता रूपी बना दिया। मेरे गुरु ने यह करते हुए बिलकुल भी समय नहीं लगाया। ऐसे महान गुरु की जितनी बड़ाई की जाए कम है।

सतगुर की महिमा, अनँत, अनँत किया उपगार।
लोचन अनँत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार॥ 3॥

शब्दार्थ- **अनँत**=अपरम्पार, अगणित। **उपगार**=उपकार। **लोचन अनँत**=प्रज्ञाचक्षु। **अनँत**=ब्रह्म।

भावार्थ- कबीरदास जी कहते हैं कि सद्गुरु की महिमा अपरम्पार है। गुरु ने अनंत मुझ पर अनंत उपकार किए हैं। गुरु की कृपा से मेरे प्रज्ञा-चक्षु खुल गए हैं और परब्रह्म के दर्शन हो गए हैं। कहने का भाव यह है कि गुरु के कारण ही अनंत ब्रह्म का ज्ञान हुआ है। इसलिए गुरु की महिमा का बखान जितना किया जाए, कम है।

राम नाम के पटतरे, देबे कौ कुछ नाहिं।
क्या ले गुर सन्तोषिए, हौंस रही मन माहिं॥ 4॥

शब्दार्थ- **पटतरे**=बदले में। **देबे**=देने को। **हौंस**=प्रबल इच्छा।

भावार्थ- कबीरदास जी कहते हैं कि गुरु ने जो मुझे 'राम' नाम दिया है, उसके बदले में दक्षिणा के रूप में देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है। क्योंकि राम नाम इतना व्यापक है कि इसके सामने संसार की सभी वस्तुएँ तुच्छ जान पड़ती है। अब मैं गुरु को क्या दूँ कि गुरु को संतोष हो जाए कि राम नाम के बदले मुझे यह मिला है। देने के लिए कुछ नहीं होने से मेरे मन की इच्छा मन में ही रह गई है। इस प्रकार यहाँ कबीरदास जी ने राम नाम की महिमा का बखान किया है और साथ ही यह बताया है कि राम नाम का साक्षात्कार गुरु के माध्यम से ही हुआ है।

सतगुर के सदकै करूँ, दिल अपणी का साछ।
सतगुर हम स्यूँ लड़ि पड़ा मुहकम मेरा बाछ॥ 5॥

शब्दार्थ- **सदकै**=न्योछावर करना। **साछ**=साक्षी। **मुहकम**=गुरु। **बाछ**=रक्षक।

भावार्थ- कबीरदास जी कहते हैं कि मैं अपने प्राण-प्रण अपने गुरु के प्रति न्योछावर करता हूँ। मैं अपने हृदय को साक्षी मानकर कहता हूँ कि यह कलियुग हमसे लड़ रहा है अर्थात् इस कलियुग की मोह-माया मुझे आकर्षित कर रही हैं, लेकिन मेरा गुरु रक्षक है। मेरे गुरु के ज्ञान-वचनों से यह कलियुग मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ पायेगा।

सतगुर लई कमाँण करि, बाँहण लागा तीर।
एक जु बाह्यां प्रीति सूँ, भीतरि रह्या सरीर॥ 6॥

शब्दार्थ- **कमाँण**=धनुष। **बाँहण**=बरसाने लगा। **बाह्यां**=चलाया। **रह्या**=घर कर लिया।

भावार्थ- कबीरदास जी कहते हैं कि सद्गुरु ने धनुष हाथ में लेकर मुझ पर ज्ञान रूपी तीर बरसाने लगे। उनमें से एक तीर ऐसा चलाया कि उस तीर से मुझे प्रेम हो गया और उस तीर ने मेरे हृदय में घर कर लिया है। कहने का भाव यह है कि गुरु ने अनेक उपदेश दिए। उन उपदेशों से मेरे हृदय में समाया हुआ अंधकार दूर हो गया और परमात्मा का ज्ञान हो गया।